''बिहार के लोकगीत, इतिहास, विभिन्न प्रकार, वर्त्तमान स्थिति एवं विशेषताएँ''

डा० शिव नारायण मिश्र
संगीत शिक्षक सूरज नारायण सिंह देवनारायण
गुड़मैता वाट्सन +2विद्यालय, मधुबनी

1. बिहार के लोक गीत

लोक गीत भाब्द अंग्रेजी के फाक सांन्ग का पर्याय रूप माना गया है। यह फाक भाब्द जर्मनी के बॉल्क भाब्द का मूल रूपान्तर है।

लोक में प्रचलित लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिग लिखे गये गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है।

श्री कुज बिहारी दास के अनुसार ''लोकगीत उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहत्कमकता की अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा सुसभ्य प्रवाहों से बाहर रहकर कम या अधिक रूप में आदिम व्यवस्था में निवास करते हैं।

भाास्त्रीय नियमों की वि ोश परवाह न करके सामान्य लाके व्यवहार को उपयोग में लाने के लिए मावन अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज रूप में प्रस्तुत करता है, वही लोक गीत है।

उपरोक्त परिभाशा से लोक गीत के तीन अर्थ प्रकट होते हैं।

1. लोक में प्रचलित गीत 2. लोक सृजित गीत, तथा 3. लोक विशयक गीत

2. लोक गीत का इतिहास

लोक गीत को समझने के बाद लोक गीत के इतिहास का वर्णन कर रहे हैं। लोक गीत के इतिहास के संदर्भ में विद्वानों का मत है कि लोकगीत का जन्म लोक मानस से हुआ है। और लोक मानस का इतिहास उतना पुराना है जितना कि मनुश्य के जन्म का। इस तरह से लोकगीत का जन्म या इतिहास भी लोक के जन्म के साथ ही माना जा सकता है। यह आम जनता की संपति रही है। जो कि श्रुति परम्परा पर आधारित रही है। इसका इतिहास वर्णमाला के उद्भव से भी माना जाता है।

प्राकृतिक संगीत ही लोकगीत है। जब भाशा का विकास पूर्ण रूप से नहीं हुआ था तब व्यक्ति अपने विचारों को प्रकट करने के लिए कुछ अस्पश्ट भाब्दों का उच्चारण करता था। उस समय वही वाणी उसकी भावना की अभिव्यक्ति एवं संगीत कहलाता था। धीरे–धीरे इसका विकास हुआ तथा समाज का भी विकास हुआ। तब उसने संगीत के साथ सामूहिक नृत्यों के महत्व को पहचाना। इस संगीत और नृत्य के प्रचार का यह फल हुआ कि उसने परम्परा की भाव–भंगिमा और उद्गारों की गहराई का अनुभव करते हुए आपसी प्रेम, सद्भावना, संगठन और प्रत्येक अर्थ में अपनत्व की भावना के महत्व को पहचाना तथा अपने ही जीवन में उन्हें प्राथमिकता प्रदान कर सभ्यता की एक नई धारा की ओर अग्रसर किया। यही संगीत लोकगीत के नाम से प्रचलित हुआ। और ये लोकगीत राश्ट्रीयता की भावना के जन्मदाता है।

इस तरह लोकगीत संगीत श्रुति परम्परा के साथ ही वैदिक युग से आज तक चले आ रहे हैं। महादेवी वर्मा के अनुसार ''सुख–दुखः भवावे ा की अवस्था के चित्रण का माध्यम का अश्रुपात, दीर्ध निःवि वास, पुलक और मुस्कान आदि अनुभाविक आत्मिक चेश्टाओं तक ही सीमित न रहकर हर्श और वेदना का स्वरूप धारण कर कण्ठ के द्वारा साकार हो उठती तभी गीतों के स्वर फुट पड़ते हैं। ये गीत किसी कवि के नहीं अपितु सामान्य जनमानय की अज्ञात सृश्टि है।''

देवेन्द्र सत्यार्थी के अनुसार कहाँ से आते हैं इनके गीत?स्मरण विस्मरण की आँख मिचौली से, कुछ अट्हास से, कुछ उदास हृदय से जीवन के खेत में ये गीत उगते हैं। कल्पना भी अपना काम करती है। रागवृति भी, भावना भी और नृत्य का हिलोरा भी।''

इस तरह लोक गीत की उत्पति के संबंध में संगीत और कल्पनाओं को आधार माना गया है। लोक साहित्य पुस्तकों के संग्रहकर्त्ता जगदम्बा प्रसाद पाण्डेय एवं श्री राके ा अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि '' लोकगीत की उत्पति के विशय में प्राचीन विचारधारा, पा चात्य विचारधारा एवं आधुनिक मतों को देखा जाए तो इसका आधार प्रायः एक है जिसमें विशमता नाम की वस्तु का कोई स्थान ही नहीं है। हृदय की तीव्र अनूभूति की अभिव्यक्ति गीत है। विविध भाव–धाराओं में बहता हुआ मनुश्य गीत के रूप में अपने हृदय को खोलता है। सुख में, दुख में, आ ाामें, निरा ाा में, आसक्ति में, विरक्ति में, उत्साह में, भय में, जब कभी मनुश्य भावातिरेक से तन्मय

और विहवल सा हो जाता है, तभी मानस से वेगवती स्त्रोतस्वामी फूट निकलती है। बस उसी क्षण लोकगीत की उत्पति होती है।

लोकगीत के इतिहास के संदर्भ में उपरोक्त विचार बहुत ही उत्तम प्रतीत होते हैं। व्यक्ति के अन्तःमनोभाव जब गीत के माध्यम से कहे जाते हैं तो वे लोक गीत कहलाते हैं और इस तरह व्यक्ति आदि काल से अपने–अपने भाव को प्रकट करता रहा है। वैदिक ग्रंथों में बिहार के लोकगीत का उल्लेख मिलता है। प्राचीन काल में पुत्र जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह आदि उत्सवों तथा विभिन्न पर्वों पर सरस तथा समधुर स्वरों में गाये जाने वाले गीतों का निर्दे ा वैदिक ग्रन्थें में उपलब्ध है। इसके अलावा वाल्मीकी रामायण, श्रीमद्भागवतगीता, रामचरितमानस आदि ग्रन्थों में लोक गीत लिखे हुए हैं। इसके अलावा संस्कृत साहित्य के अनेक कवियों ने लोक गीत गाये जाने का वर्णन अपने काव्य में किया है, इसमें पर्व एवं उत्सव व संस्कार के अलावा मेहनत मजदूरी जैसे चक्की पीसना, धान कूटना, खेत जोतना एवं थकान दूर करने के लिए गीतों द्वारा अपने चित्त को प्रसन्न करने का वर्णन मिलता है।

कवि श्री हर्श ने अपने एक संस्कृत महाकाव्य नैशध चरित्र में स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले गीतों का तथा प्रकृति में भी लोकगीतों की परंपरा का वर्णन किया है। राजा भालिवान द्वारा संग्रहित गाथा 'सप्त ाती' तथा पाली के चालकों की कथा में भी लोकगीतों का विवरण मिलता है।

प्राचीन बिहार में महात्मा बुद्ध के समय से राजगीर और वै ाली नगरों में गायिकाओं और नर्तकियों के साक्ष्य मिलते हैं। मिथिलांचल में 13वीं भाताब्दी के आरंभ में नानदेव द्वारा गीत की रचना की गयी है। तुर्क भासन काल में बिहार में सूफी संतो के माध्यम से संगीत की प्रगति हुई है। लोकगीत भास्त्रीय संगीत से पुराना माना जाता है। भास्त्रीय संगीत में कुछ ऐसे राग हैं जो मूल रूप से लोक धुन थे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लोक गीत का इतिहास बहुत ही पुराना है। लोक संगीत का जन्म लोक जन्म के बाद हुआ है। लोक संगीत की ध्वनियों में, स्वरों में, लय में, इसकी गायकी में, लोगों की संवेदना, सुख–दुख, हर्श–निशाद, एवं मनोभावों की अभिव्यक्ति होती है। और, यही अभिव्यक्ति जब लोक गीत का रूप धारण कर लेती है तो लोकगीत कहलाती है।

3. बिहार के लोक गीत के विभिन्न प्रकार

बिहार में विभिन्न प्रकार के लोकगीत प्रचलित हैं, जो निम्न प्रकार से हैं।

1. संस्कार संबंधी गीत

हर व्यक्ति के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक कुल सोलह संस्कार माने गये है। मानव के जीवन में हर अवसर पर कुछ उत्सव होता है एवं उस समय जो गीत गाये जाते हैं, वे संस्कार संबंधी गीत कहे जाते हैं। यहाँ हम कुछ प्रमुख संस्कारों का वर्णन कर रहे हैं।

गर्भाधान, जन्मोत्सव, साथ, सरिया रचना, बधाई, छठी, अनप्रासन, पसनी, कनछेदन, मुंडन, जनेऊ, विवाह, गवना, मृत्यु इत्यादि

मानव के सोलह संस्कारों में बिहार में मुख्य रूप से निम्न अवसरों पर लोकगीत गाने का प्रचलन है।

1. ऋतु संबंधी गीत (मौसमी गीत)

बिहार में विभिन्न ऋतुओं में अलग–अलग प्रकार के गीत गाने का प्रचलन है, जिसे मौसमी गीत भी कहा जाता है। इस प्रकार से हर ऋतु में कोई गीत गाया जाता है जिसमें मौसम से संबंधी बातों का वर्णन होता है। बिहार में बारह महीनों का उल्लेख मिलता है जो इस प्रकार है।

1. चैत 2. बै ाख 3. जेठ 4. आशाढ़ 5. सावन 6. भादो 7. आसिन 8. कार्तिक 9. अगहन 10. पूस 11. माघ 12. फागुन

इस अवसर पार गाये जाने वाले गीत इस प्रकार हैं।

1. चैता 2. बारहमासा 3. छौमासा 4. कजली 5. मल्हार 6. सावनी गीत

3. पर्व / व्रत संबंधी गीत

बिहार में होने वाले पर्व एवं व्रत के अवसर पर लोक गीत गाने का प्रचलन है जिसे पर्व या व्रत संबंधी लोक गीत कहा जाता है। यहाँ हम बिहार में प्रचलित कुछ प्रमुख पर्व एवं त्योहार का उल्लेख कर रहे हैं।

1. छठ 2. जिउतिया 3. तीज 4. अन्नत 5. खिचड़ी 6. गोधन 7. सतुआन 8. वि वकर्मा पूजा 9. पीडिया 10. बहुरा 11. चउकचन्ना 12. समा–चकेवा 13. वटसावित्री बरसायत 14. मधश्रावणी 15. जूड़ भीतल 16. डोरा 17. कर्मा 18. बिहुला बिशहरी 19. कांवर 20. रामनवमी 21. रक्षाबंधन 22. महावीर जयन्ति 23. बसन्त पंचमी / सरस्वती पूजा 24. बुद्ध जयन्ति 25. दुर्गापूजा / विजयद ामी 26. दीपावली 27. गोवर्धन 28. देवोउत्थान 29. गुरू–गोविन्द सिंह जन्म दिवस 30. महालया 31. मुहर्रम 32. क्रिसमस 34. होली 35. ि ावरात्रि 36. जन्माश्टमी 37. अनन्त चतुर्द ाी 38. दवात पूजा 39. नाग पंचमी इत्यादि

4. जाति संबंधी गीत

बिहार में रहने वाले विभिन्न धर्म एवं जाति के लोग हैं जो विभिन्न तरह के गीत गाते हैं उसे जाति संबंधी गीत कहा जाता है। बिहार में विभिन्न जाति के लोग रहते हैं जिनका अपना गीत होता है, जैसे अहीर, तेली, कहार, चमार, धोबी, मल्लाह, दुसाध, पासी, इत्यादि।

यहाँ मैं कुछ प्रमुख जाति वर्ग के गीतों का उल्लेख कर रहा हूँ।

1. बिरहा 2. नउमा भक्कड़ 3. पवड़िया गीत इत्यादि

5. देवी देवता के गीत

बिहार में लोग देवी–देवताओं पर आधारित लोकगीत भी गाते हैं। अपनी श्रद्धा के अनुसार विभिन्न अवसरों पर देवी देवता के जो गीत–भजन गाते हैं उन गीतों को देवी–देवता का गीत माना जाता है। इसके अन्तर्गत निम्न प्रकार के गीत प्रचलित हैं।

भगवान के गीत

1. ि ावजी का गीत (नचारी) 2. हनुमान का गीत 3. डीह बाबा का गीत 4. ब्रहम बाबा के गीत 5. राम भगवान के गीत 6. कृश्ण भगवान के गीत 7. वि वकर्मा भगवान के गीत 8. इन्द्र भगवान के गीत 9. भैरव जी का गीत आदि

देवी गीत

1. काली माता के गीत 2. दुर्गा माता के गीत 3. गंगा माता के गीत 4. तुलसी माता के गीत 5. यमुना माता के गीत 6. कमला माता के गीत 7. सरयू माता के गीत 8. सन्तोशी माता के गीत 9. सरस्वती माता के गीत 10. धरती माता के गीत

इस प्रकार बिहार में देवी–देवता के गीतों को गाने का प्रचलन है जिसे हम देवी–देवता गीत (भजन) के रूप में जानते हैं।

6. कृशि संबंधी गीत

बिहार कृशि प्रधान राज्य है। यहाँ के अधिकतर लोग कृशि पर आधारित हैं। ये लोग जब कृशि संबंधित कार्य करते हैं, तो गीत गाते रहते हैं, जिसे कृशि संबंधी गीत के अन्तर्गत रखा जाता है। इसमें अवसरों पर गीत गाने का प्रचलन है–

1. जोतनी का गीत 2. गोड़नी का गीत 3. रोपनी का गीत 4. सोहनी का गीत 5. सिचिया का गीत 6. कटनी का गीत 7. भीला बनाने का गीत 8. जाता पीसने का गीत 9. चरखी कोल्हू का गीत 10. दवरी का गीत 11. भोज का गीत इत्यादि

7. गाथा संबंधी गीत

बिहार में विभिन्न प्रकार की लोक गाथाओं का प्रचलन है। लोक गााथा के माध्यम से बिहार में प्रसिद्ध राजा एवं महान् पुरूशों का वर्णन गीत और अभिनय के माध्यम से किया जाता है। गाँव के लोग वि ोश अवसरों पर इस प्रकार का कार्यक्रम रखते हैं। बिहार के कलाकारों की कुछ मंडलियां भी इन गाथाओं को करते हैं। गाँव में आयोजित मेला या पर्व इत्यादि के वि ोश अवसरों पर भी कभी–कभी यह देखने को मिलता है। इस गाथा में गीत गाया जाता है। इसीलिए हम इसे गाथा गीत संबंधी लोक गीत में रख रहे हैं। गाथा संबंधी कुछ प्रमुख गीत इस प्रकार हैं।

लेरिकायन गीत, नयका बंजारा गीत, विजमैल गीत, राजा सलहेस गीत, दीन भदरी गीत, अल्हा ऊदल गीत, राजा ढ़ोलन सिंह गीत, नुनाचार गीत, धुधली–घटनागीत, छतरी चौहान गीत, लुकेसरी देवी गीत, कालिदास गीत, मनसा राम गीत, छेछनमल गीत, लाल महाराज गीत, गरबी दयाल सिंह गीत, मीरायन गीत, हिरनी बिरनी गीत, कुंवर बृजभार गीत, राजा विक्रमादित्य गीत, बिहुला गोपीचन्द गीत, राजा हरि ाचन्द्र गीत, कारूखिर गीत, मैनावती गीत इत्यादि।

8. लोक नाट्य गीत

बिहार के लोक जीवन में लोक नाट्य का वि ोश महत्व है। बिहार में विभिन्न अवसरों पर इसे आयोजित किया जाता है। लोक नाट्य में कथानक, संवाद अभिनय, नृत्य, वि ोश दृ य के अलावा गीत की प्रस्तुति भी की जाती है। गीत का समावे ा लोक नृत्य में होता है। अतएव हम लोक नाट्य पर आधारित गीत का वर्णन कर रहे हैं।

जट–जटीन गीत, सामा चकेवा गीत, विदेसिया गीत, भकुली बंका गीत,डोमकक्ष गीत, किरतिनिया गीत, भगती गीत।

9. लोक नृत्य प्रधान गीत

बिहार में विभिन्न प्रकार के लोकनृत्यों के आयोजन विभिन्न अवसरों पर किये जाते हैं। लोक नृत्य में भी गीत गाये जाते है। जिस पर नृत्य किया जाता है इसीलिए यहाँ मैं लोक नृत्य प्रधान गीतों का वर्णन कर रहे हैं।

छऊ नृत्य प्रधान गीत, कंठ गोडवा नृत्य प्रधान गीत, लोड़ा नृत्य प्रधान गीत, धोबिया नृत्य प्रधान गीत, झिझिया नृत्य प्रधान गीत, करिया झूमर नृत्य प्रधान गीत, खोलडिंन नृत्य प्रधान गीत, पंवडिया नृत्य प्रधान गीत, जोगिड़ा नृत्य प्रधान गीत, विदापत नृत्य प्रधान गीत, झिरनी नृत्य प्रधान गीत, करमा नृत्य प्रधान गीत,

10. विविध प्रकार के गीत

बिहार में विभिन्न अवसरों पर लोगों द्वारा अनेक प्रकार के गीत गाये जाते हैं। जिन्हें विविध प्रकार के गीतों की श्रेणी में रखा गया है। इसके अन्तर्गत निम्न प्रकार के गीत प्रकार आते हैं–

पूर्वी गीत, निर्गुण गीत, भजन गीत, अलाचारी गीत, पराती गीत (प्रातीः गीत) झूमर गीत, खेल तमा ो गीत, वटगमिनी गीत, लोरी गीत, तिरहुती गीत, योग गीत, विद्यापति गीत, तुसारी गीत, द्विरागमन गीत, डहकन गीत, झूला गीत इत्यादि।

इस प्रकार बिहार में प्रचलित विभिन्न प्रकार के लोक गीतों को 10 अलग–अलग प्रकारों में बांटा गया है।

लोकगीतों की वर्त्तमान स्थिति

वर्त्तमान में लोकगीतों की स्थिति संतोशजनक मानी जा सकती है। प्राचीन समय में लोकगीतों की प्रस्तुति गाँव घर में होती थी। परन्तु आज संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है। लोग गाँव को छोड़कर भाहर की ओर भाग रहे हैं। आज एकल परिवार का चलन हो गया है। लोग केवल अपने से मतलब रखते हैं। समाज या गाँव में क्या हो रहा है। लोगों को कोई मतलब नहीं रह गया है। परन्तु ऐसा नहीं है कि लोकगीत का प्रचलन अब नहीं है। आज के वैज्ञानिक युग में आका ावाणी, टी.वी. चैनल, कैसेट कम्पनी एवं विभिन्न संगठनों द्वारा लोक गीतों को बचाये रखने तथा उसे बढ़ाने का प्रयास हो चल रहा है। हमें प्रतिदिन आका ावाणी के माध्यम से विभिन्न प्रकार के लोक गीत सुनने को मिलते हैं। उसके माध्यम से लोक गीत गाने वाले कलाकार को प्रोत्साहन मिल रहा है एवं उचित पारिश्रमिक भी मिलता है। पर्व त्योहार एवं वि ोश अवसर जैसे छठ पर्व, दुर्गापूजा, सावन आदि अवसरों पर सीडी, कैसेट बाजार में उपलब्ध रहते हैं। ध्वनि विस्तारक यंत्र द्वारा हमें विभिन्न प्रकार के लोकगीत सुनने को मिलते हैं। लोक गीत के कलाकार व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से सांस्कृतिक दल बनाकर वि ोश अवसरों पर लोकगीतों का कार्यक्रम करते हैं। बिहार सरकार तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा भी लोक संगीत के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है एवं उनके कलाकारों कों पुरस्कार एवं सम्मान दिया जाता है। बिहार की प्रसिद्ध लोक गायिका स्व0 विन्ध्यवासिनी देवी, भारदा सिन्हा आदि कलाकारों को सरकार द्वारा पद्मश्री सहित कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं। आज लोक गीत की प्रस्तुति गाँव घर से ज्यादा विभिन्न मंचों पर देखे और सुने जा सकते हैं।

आज पारंम्परिक लोकगीत के साथ फूहड़ एवं अ ालील गीतों का प्रचलन भी काफी तेजी से बढ़ रहा है। जो चिन्ता की बात है।

लोकगीतों की वि ोशताएँ

बिहार में अनेक प्रकार की लोकगीत प्रचलित हैं। सभी गीतों की अपनी–अपनी अलग वि ोशताएँ होती हैं। व्यक्ति अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति गीत के माध्यम से करते हैं। इस प्रकार के गीत सुनते समय उनकी वि ोशतायें झलकने लगती हैं।

जगदम्बा प्रसाद पाण्डेय एवं श्री राके ा ने अपनी पुस्तक लोक साहित्य में लोक गीतों की सामान्य वि ोशताओं का वर्णन किया है। इसमें पंडित राम नरे ा त्रिपाठी, डा0 भयाम परमार, डा0 बासुदेव भारण अग्रवाल, डा0 देवेन्द्र सत्यार्थी, डा0 चिन्तामणि उपाध्याय, डा0 तेज नारायण लाल, डा0 भांकरलाल यादव एवं डा0 मोहन बाबुलकर द्वारा निर्दिश्ट वि ोशताओं का वर्णन इस प्रकार किया गया है–

1. गीत मौखिक परम्परा से संचित निधियाँ हैं।
2. ये अपोरूशेय (वेदों के रूढ़िवादी अर्थ में) है।
3. इसमें नाम और य ा की लालसा नहीं मिलती हैं।
4. ये बनते और बिगड़ते हैं।
5. इनकी मौलिक प्रति अप्राप्य है।
6. गीतों में संगीत और गेयता होती है।
7. इनमें लम्बे चौड़े कथानकों का अभाव होता है।
8. दे ा काल की सीमा का बंधन नहीं होता है।
9. इनमें जीवन के अभाव व्यक्त होते हैं अंकित नहीं।
10. इसमें मानव संस्कृति के सरल और भावों का व्यापक उभार होता है।
11. इनके स्वरूप में दे ा की प्रकृति और संस्कृति अपने रूप का बखान करती है।
12. कृत्रिमता के अभाव में, लोक की ये स्वभाविक सजावट रहित अभिव्यक्तियाँ हैं।
13. इनकी भाशा लोक की बोली है, छन्दोवद्ध काव्य की भाशा नहीं।
14. यह भाहरी वातावरण से दूर है। इसमें ग्रामांचल की प्रकृति, वातावरण, मानव जीवन, ऋतु आदि का चित्रण होता है।
15. श्री देवेन्द्र सत्यार्थी द्वारा संकेतिक वि ोशता यह भी बताया है कि जनपद की कन्याएं इन्हें ले जाती अथवा लाती हैं।
16. ये प्रकृति के उद्‌गार हैं। डा0 भयाम परमार के अनुसार तड़क–भड़क से दूर भाी ो की तरह स्वच्छ, सरलता, रस, माधुर्य इनके गुण हैं।
17. डा0 भयाम परमार ने ही एक अन्य वि ोशता यह भी बताया है कि इतिहास इनमें छिपा होता है। नारी हृदय की वि ालता, जन्म से लेकर मृत्युपर्यनत संबंध, मानव विकास की निधियां भावों के अ ोश भंडर?ार एवं लय इनकी वि ोशतायें हैं।
18. सामूहिक भाव भूमि लोक कल्याण की दृश्टि, सामूहिक वृत्ति तथा सामान्य स्वच्छता है।

इस तरह उपरोक्त वि ोशताओं का वर्णन किया गया है। चूकि लोक संगीत का जन्म लोक के जन्म के साथ ही माना जाता है। इसकी ध्वनि में, स्वरों में रस और इसकी गायिकी में लोक हृदय में उमड़ने–धुमड़ने वाली संवेदनाओं, सुख–दुख, हर्श–विशाद, पीडा–प्रसन्नता यहाँ तक कि लोक हृदय की धड़कनों का स्पन्दन होता है। डा0 नि ाा रावत ने अपनी पुस्तक यू.जी.सी. संगीत तृतीय पत्र में लोक संगीत की तीन वि ोशताओं का वर्णन किया है। 1. यह

लोक निर्मित होना चाहिए। 2. लोक प्रचलित होना चाहिए। 3. लोक विशयक होना चाहिए।

किसी भी लोकगीत के वि लेशण से हमें उपरोक्त वि ोशताएं देखने को मिलती है। क्योंकि प्रत्येक लोक गीत निर्मित होता है अर्थात यह लोंगों के द्वारा बना होता है। इसके निर्माण के लिए कोई खास नियम नहीं होता है। ऐसा देखा गया है कि गाँव घर की महिलायें भी लोक गीत का निर्माण कर गाती रहती हैं। ये मानव के मन के उपज होती है। इसमें मानव की संवेदना, सुख–दुख, हर्श–विशाद आदि का चित्रण होता है।

लोक गीत लोक में प्रचलित होता है। समय का विना ाकारी प्रभाव इस पर नहीं पड़ता है। समस्त जन समूह इन्हें अपनी रचना मानते हैं। किसी भी कलम द्वारा लिखे बिना भी, कई लोक गीत अमर हो गये हैं। जिससे स्प्श्ट है कि लोक गीत प्रचलित होता है। लोक गीत लोक विशयक होता है अर्थात लोक गीत किसी न किसी विशय पर आधारित होता है। लोकगीत संस्कारों पर आधारित होते हैं। तो कई मौसम संबंधी गीत भी होते हैं। कहने का तात्पर्य है कि लोक गीत लोक विशय पर आधारित होते हैं।

संदर्भ सूची

ऽ संगीत (तृतीय पत्र) लेखक–डा0 नि ाा रावत

ऽ लोक साहित्य, सम्पादक–जगदम्बा प्रसाद पाण्डेय एवं श्री राके ा

ऽ संगीत निबंध संग्रह, लेखक हरि ाचन्द्र श्रीवास्तव

ऽ गीत मैथिली संस्कार गीत संकलन–श्रीमती तारणी मिश्र